

INSTITUTE OF FINE ARTS CSJM UNIVERSITY, KANPUR



ADVERTISING FOUNDATION AND DIMENSION

For MFA Applied Arts

BY - SMRITI TRIPATHI



संरचना

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 सृजनात्मकता का अर्थ
 - 1.4.1 प्रवाह
 - 1.4.2 मौलिकता
 - 1.4.3 विविधता
 - 1.4.4 विस्तारण
- 1.5 सृजनात्मकता की प्रकृति तथा विशेषताएँ
- 1.6 सृजनात्मकता की पहचान
- 1.7 सृजनात्मकता व्यक्ति की विशेषताएँ
- 1.8 सृजनात्मकता को पोषित करने की विधि
- 1.9 सारांश
- 2.0 अपनी प्रगति जाँचिये

1.1 प्रस्तावना

आज के युग में विभिन्न देशों के अंतर्गत नये अविष्कार हो रहे हैं, इसमें वैज्ञानिकों का अथक परिश्रम छिपा हुआ है, साथ ही उनकी सृजनात्मकता का बड़ा योगदान होता है, सृजनात्मकता सभी में कम-अधिक मात्रा में पायी जाती है। प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति होती है।

सृजनात्मकता वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विद्वतापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने तथा विचार करने में समर्थ बनाती है। प्रचलित ढंग से हटकर किसी नये ढंग से चिंतन करने तथा कार्य करने की योग्यता ही सृजनात्मकता है।

सृजनात्मकता के अंतर्गत प्रवाह, विविधता, मौलिकता तथा विस्तारण जैसे तत्वों को परिलक्षित किया गया है, सृजनात्मकता को अनेक विशेषताये हैं, जैसे कि सार्वभौमिकता, खुले विचार, वृहद क्षेत्र, गैरपरंपरागत चिंतन, सृजनात्मकता की प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिकों ने चार स्तरीय विभाजित किया है,

- (a) तैयारी
- (b) परिकल्पना बनाना
- (c) परिकल्पना परीक्षण
- (d) निरीक्षण

सृजनात्मकता बालक की पहचान उसके गुणों के आधार पर की जा सकती है। सृजनात्मक बालक में धाराप्रवाह, मौलिकता, आत्मानुशासन, दृढनिश्चय, उत्साह जैसे अनेक गुण पाये जाते हैं, सृजनात्मक बालकों की पहचान कर उसे बढ़ावा देना आवश्यक है। शिक्षक तथा अभिभावक दोनों को ही बालकों में सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना चाहिये। बालकों को स्वतंत्रता देना, इर दूर करना, अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करने जैसे उपायों से सृजनात्मकता को प्रोत्साहित किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्याय में हम इन्हीं संकल्पनाओं का अध्ययन करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि-

- सृजनात्मकता को परिभाषित कर सकेंगे।
- सृजनात्मकता का अर्थ समझ सकेंगे।
- सृजनात्मकता की विशेषताओं को बता सकेंगे।
- सृजनात्मक बालकों की पहचान कर पायेंगे।
- सृजनात्मक के तत्वों को समझा सकेंगे।
- सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने की विधियों का वर्णन कर सकेंगे।

1.3 सृजनात्मकता का अर्थ (Meaning of creativity)

भिन्न-भिन्न वैज्ञानिकों द्वारा सृजनात्मकता को भिन्न-भिन्न ढंग से परिभाषित किया गया है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत सृजनात्मकता की कुछ परिभाषाएँ निम्नवत हैं।

- **डीहान तथा हेविंगहर्स्ट के अनुसार** “सृजनात्मकता वह विशेषता है, जो किसी नवीन व वांछित वस्तु के उत्पादन की ओर प्रवृत्त करे। यह नवीन वस्तु संपूर्ण समाज के लिए नवीन हो सकती है। अथवा उस व्यक्ति के लिए नवीन हो सकती है जिसने उसे प्रस्तुत किया।”

“Creativity is the Quality Which Leads to the Production of Something new and Desirable. The New Product May be to Society or new to the individual who create it”

- **Dehan and Havinghursi**

- **डेवहल के शब्दों में** “सृजनात्मकता वह मानवीय योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।”

“Creativity is the human ability by which he present any noble work or ideas”

- **J.E. Drevhal**

- क्रो एवं क्रो के अनुसार “सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।”

“Creativity is mental process to express original outcome”

- **Crow and Crow**

- विलसन के शब्दों में “सृजनात्मकता मानव मन की वह शक्ति है जो संबंधों को प्रत्यावर्तित कर नये विषयवस्तु का निर्माण करती है तथा नये संबंधों का निर्माण करती है।”

“Creativity is the power of human mind to create new content by transforming relations and there by generating new correlates”

- **Willsons**

- गिलफोर्ड के शब्दों में “सृजनात्मकता प्रक्रिया वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कुछ नया निर्मित होता है- विचार, वस्तु जिसमें पुराने तत्वों को नवीन तरीके से व्यवस्थित किया जाता है, नवीन सृजन किसी समस्या का समाधान प्रस्तुत करता हो”।

“The creative process is any process by which something new is produce- an idea or an object including a new form or arrangement of old elements The new creation must contribute to the solution of some proplem”

- **Guillford**

- आसुबेल के शब्दों में ‘सृजनात्मकता सामान्यीकृत बौद्धिक योग्यताओं, व्यक्तित्व चरों तथा समस्या समाधान लक्षणों का सामान्यीकृत समूह होता है।’

“Creativity is generalized constellation of intellectual abilities, personality, variable & problem solving traits

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि सृजनात्मकता का संबंध प्रमुख रूप से मौलिकता या नवीनता से है। सृजनात्मकता प्रक्रिया तथा उत्पाद विचार तथा निर्णय होती है परंतु इन सभी के केन्द्र में सृजनात्मकता के अंतर्गत नवीनता होना आवश्यक है।

समस्या पर नये ढंग से सोचने तथा समाधान खोजने के प्रयास से सृजनात्मकता परिलक्षित होना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि सृजनात्मकता वह योग्यता है, जो किसी व्यक्ति को किसी समस्या का विद्वतापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने तथा विचार करने में समर्थ बनाया। प्रचलित ढंग से होकर किसी नये ढंग से चिंतन करने तथा कार्य करने की योग्यता ही सृजनात्मकता है।

1.4 सृजनात्मकता के तत्व

हमने देखा कि सृजनात्मकता को जिज्ञासा, कल्पना, मौलिकता, खोजी प्रवृत्ति, लचिलापन प्रवाह, नवीनता के संदर्भ में परिभाषित किया गया है। सृजनात्मकता विविध कार्यों जैसे वैज्ञानिक अनुसंधान, संगीत कलाकृति, लेखन काव्य, चित्रकला भवन, निर्माण सृजन आदि के रूप में परिलक्षित होती है।

सृजनात्मकता को निम्न चार तत्वों के परिलक्षित किया गया है।

1.4.1 प्रवाह (Fluency)

प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गयी समस्या पर अधिका-अधिक विचारों या प्रत्युत्तरों को प्रस्तुत करने से है।

प्रवाह को पुनः चार भागों में बाँटा जा सकता है।

1. वैचारिक प्रवाह (Ideational Fluency)
2. अभिव्यक्ति प्रवाह (Expressional Fluency)
3. साहचर्य प्रवाह (Associative Fluency)
4. शब्द प्रवाह (Word Fluency)

वैचारिक प्रवाह में विचारों को प्रोत्साहित किया जाता है। वैचारिक जैसे किसी कहानी का शीर्षक बताईये, किसी वस्तु के एक से अनेक उपयोग बताना, किसी वस्तु को सुधारने के अनेक तरीके बताना, आदि, अभिव्यक्ति प्रवाह में मानवीय अभिव्यक्तियों के प्रस्फुटन को प्रोत्साहित किया जाता है, जैसे चार शब्दों से वाक्य बनाईये, अपूर्ण वाक्य पूर्ण कीजिए साहचर्य प्रवाह से तात्पर्य,

दिये गये शब्दों या वस्तुओं में परस्पर साहचर्य स्थापित करने से है। जैसे किसी दिये गये शब्द से अधिकाधिक पर्यायवाची या विलोम लिखना। शब्द प्रवाह का संबंध शब्दों से होता है। जैसे दिये गये प्रत्ययों या उपसर्गों (Prefix/Suffix) से शब्द बनाना। किसी व्यक्ति के द्वारा किसी सृजनशील परीक्षण के किसी पद (Item) पर प्रवाह को प्रायः उस पद पर दिये गये प्रत्युत्तरों की संख्या से व्यक्त किया जाता है।

1.4.2 विविधता (Flexibility)

विविधता से अभिप्राय किसी समस्या पर दिये गये प्रत्युत्तरों या विकल्पों में विविधता होने से है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत विकल्प की तीन विमाएँ हैं। स्वतः स्फूर्त विविधता (Figural Spontaneous Flexibility), आकृति अनुकूलन विविधता (Figural Adaptive Flexibility), तथा शाब्दिक स्वतः स्फूर्त विविधता (Semantic Spontaneous Flexibility), आकृति स्फूर्त विविधता से तात्पर्य किसी वस्तु या आकृति में सुधार करने के उपायों की विविधता से है।

आकृति अनुकूलन विविधता से अभिप्राय, किसी वस्तु या आकृति के रूप में किसी दिये गये रूप में परिवर्तित करने की विविधता से है।

शाब्दिक स्फूर्त विविधता में वस्तुओं या शब्दों के प्रयोग में विविधता को देखा जाता है। सृजनात्मकता के परीक्षण के किसी पद (Item) पर विविधता को प्रायः उस पद पर व्यक्ति के द्वारा दिये गये प्रत्युत्तरों के प्रकार (Type of Questions) की संख्या से व्यक्त किया जाता है परीक्षण पर किसी व्यक्ति के कुल विविधता प्राप्तांक को ज्ञात करने के लिए उसके द्वारा विभिन्न पदों पर प्राप्त विविधता अंकों को जोड़ा जाता है।

1.4.3 मौलिकता (Originality)

मौलिकता से अभिप्राय व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किये गये विकल्पों या उत्तरों का असामान्य (Uncommon) अथवा अन्य व्यक्तियों के उत्तरों से भिन्न होते हैं। इसमें देखा जाता है कि व्यक्ति द्वारा दिये गये विकल्प उत्तर सामान्य

या प्रचलित (Popular) विकल्पों से कितने भिन्न है। दूसरों शब्दों में मौलिकता मुख्य रूप से नवीन (Newness) से संबंधित है, जो व्यक्ति अन्यो से भिन्न विकल्प प्रस्तुत करता है।

वस्तुओं के नये उपयोग बताना, कहानी, कविता या लेख का शीर्षक लिखना, परिवर्तनों के दूरगामी परिणाम बताना नवीन प्रतीक खोजना, मौलिकता के उदाहरण है।

1.4.4 विस्तारण (Elaboration)

विस्तारण से तात्पर्य दिये गये विचारों या भावों कि विस्तृत व्याख्या व्यापक पूर्ति या गहन प्रस्तुतिकरण से होती है। विस्तारण को दो भागों-शाब्दिक विस्तारण (Semantic Elaboration) तथा आकृतिक विस्तारण (Figural Elaboration) में बाँटा जा सकता है, शाब्दिक विस्तारण में किसी दी गयी संक्षिप्त घटना, क्रिया, परिस्थिति आदि को विस्तृत करके प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है। जबकि आकृति विस्तारण में किसी दी गयी रेखा अपूर्ण चित्र में जोड़कर उसे एक पूर्ण एवं सार्थक चित्र बनाना होता है।

1.5 सृजनात्मकता की प्रकृति तथा विशेषताएँ

सृजनात्मकता के स्वरूप तथा प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए अनेक मनोवैज्ञानिकों के द्वारा प्रयास किये गये हैं। यद्यपि सृजनात्मकता के स्वरूप प्रकृति तथा औचित्य को स्पष्ट करने के किसी पूर्ण संतोषजनक या सर्वमान्य सिद्धांत को अभी तक प्रस्तुत नहीं किया जा सका फिर भी अनेक मनोवैज्ञानिको ने सृजनात्मकता के विशेषताओं तथा सृजनात्मकता के स्वरूप को अपने-अपने दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

- **सृजनात्मकता सार्वभौमिक है (Creativity in universal)**

सृजनात्मकता किसी एक व्यक्ति, समूह, जाति तक सीमित नहीं होती, यह सार्वभौमिक होती है यह उम्र स्थान संस्कृति के रुकावटों से बाधित नहीं होती। हम में से सभी कुछ हद तक सृजनशील होते हैं।

- **सृजनात्मकता प्रकृति प्रदत्त तथा अर्जित होती है**

कई शोध यह मानते हैं कि सृजनात्मकता ईश्वर की देन होती है और नैसर्गिक होती है सृजनात्मकता पर संस्कृति, वातावरण, शिक्षा अनुभव प्रशिक्षण के प्रभाव को भी नकारा नहीं जा सकता है इसलिए सृजनात्मकता को हम नैसर्गिक प्रकृति प्रदत्त तथा प्रशिक्षण का मिश्रण कहते हैं। सृजनात्मकता कुछ नया निर्मित करती है

सृजनात्मकता व्यक्ति के कुछ नया निर्मित करने की योग्यता को प्रदर्शित करती रहती है, परंतु यह आवश्यक नहीं है कि पूर्णतः नयापन हो पूर्व से ज्ञात तथ्यों का पुनर्गठन भी हो सकता है जो पहले से ज्ञात है उसमें सुधार करके कुछ नयापन लाया गया हो, सृजनात्मकता कहलायेगी। परंतु सृजनात्मकता में मौलिकता का होना अति आवश्यक है। पूर्व ज्ञात रचना की पुनरावृत्ति सृजनात्मकता के अंतर्गत नहीं हो सकती।

- **सृजनात्मकता उदार खुले विचारकों की होती हैं**

सृजनात्मकता संकीर्ण विचारों से अलग होती है तथा स्वतंत्र और खुले विचारों को बढ़ावा देती है तथा व्यक्ति को उसकी ईच्छा के अनुसार करने पूर्व क्रियाकलापों से कुछ अलग करने के लिए प्रेरित करती है सृजनात्मकता व्यक्ति की अपनी रचना को लेकर अलग धारणा होती है। इसलिए जरूरी नहीं है कि सृजनात्मकता रचना दूसरो को भी वह खुशी दे जों सृजन करने वाले व्यक्ति को प्राप्त हुआ हों।

- **सृजनात्मकता में अहंकार का समावेश होता है**

सृजनात्मकता कार्य में व्यक्ति का अहंकार समाहित होता है उसकी अहं (Individually) और पहचान (Identity) पूरी तरह से सृजनात्मक कार्य करने में समाहित होता है। किसी के कार्य करने की क्षमता, जीवन दर्शन और व्यक्तित्व इसके द्वारा किये गये सृजनात्मक कार्य में परिलक्षित होता है चाहे वह कला, लेखन हो या कुछ अन्य सृजनात्मक व्यक्ति अपने कार्य श्रेय लेता है। इसलिए उसमें अहंकार से भरे वक्तव्य करता है। जैसे यह तो मेरा सृजन है। मैंने इस समस्या का समाधान प्राप्त किया है यह मेरा विचार है इत्यादि।

- **सृजनात्मकता का क्षेत्र वृहद होता है**

सृजनात्मकता भाव, विचार सीमित नहीं होते यह मानव जीवन के हर क्षेत्र को व्याप्त करते हैं। यह वैज्ञानिक खोज कला तक सीमित नहीं होते अपितु कविता लेखन कथा लेखन नाटक नृत्य संगीत सामाजिक और राजनैतिक नेतृत्व व्यापार शिक्षा और अन्य व्यवसायों को समाहित करती है।

- **सृजनात्मकता तथा बुद्धि दोनों का साथ होना आवश्यक नहीं है**

शोध द्वारा यह प्रदर्शित किया है कि सृजनात्मकता तथा बुद्धि में कोई घनात्मक संबंध नहीं है। एक दूसरे के लिए आवश्यक नहीं है। जो छात्र बुद्धि परीक्षणों में ज्यादा अंक लाते हैं। संभव है वे सृजनात्मक परीक्षण में अच्छा प्रदर्शन न कर पाये संभव है बच्चा बुद्धि परीक्षण में कमजोर हो वह कुछ नया सृजित करे।

इस विषय पर की गई शोध द्वारा प्रस्तुत तथ्यों को देखा जाये तो यह प्रतीत होता है कि यद्यपि किसी के व्यक्तित्व में बुद्धि तथा सृजनात्मकता का कार्य अलग हो, सृजनात्मकता अभिव्यक्ति हेतु न्यूनतम बौद्धिक स्तर का

होना आवश्यक है कभी-कभी जड़बुद्धि या मंदबुद्धि सृजनशील हो सकते हैं। प्रत्यक्ष जीवन में हम ऐसे उदाहरण बहुत कम ही दिखायी देते हैं।

उच्च बुद्धि लब्धि वाला व्यक्ति जरूरी नहीं की सृजनात्मक हो एक व्यक्ति प्रखर बुद्धि हो परंतु सृजनात्मक न हो साथ ही यह आवश्यक नहीं है कि सृजनशील व्यक्ति बौद्धिक दृष्टि से प्रतिभाशाली हो

Kinto and Kirby (1986) के शब्दों में “एक व्यक्ति अत्यन्त (Bright) प्रखर बुद्धि परंतु सृजनशील न हो तथा अति सृजनशील परन्तु जरूरी नहीं की बौद्धिक दृष्टि से प्रतिभाशाली हो, इसलिये सृजनात्मकता तथा बुद्धि में कोई स्पष्ट (निश्चित) संबंध नहीं पाया गया।

-
- सृजनात्मकता परंपरागत चिंतन की अपेक्षा बहुविध चिंतन पर आधारित होता है।
(Creativity rests more on divergent thinking than on convergent thinking)
-

बहुविध गैरपरंपरागत चिंतन (Divergent thinking) व्यक्ति को अलग-अलग दिशा में सोचने के लिए प्रवृत्त करता है। जिससे किसी एक समस्या या प्रश्न के अनेक संभावित समाधान प्रस्तुत किया जाता है।

दूसरी तरफ परंपरागत चिंतन एक संकीर्ण (Narrow) प्रक्रिया हैं। जो व्यक्ति को किसी समस्या के एक ही समाधान प्रस्तुत करती है।

गैरपरंपरागत चिंतन सृजनशील व्यक्ति की विशेषता है तथा सामान्य व्यक्ति से अधिक पायी जाती है। इसलिए सृजनशील परीक्षण में ऐसे प्रश्न-पद रखे जाते हैं जिनके एक से ज्यादा उपयोग या हल होते हैं।

-
- सृजनात्मकता को बुद्धि से अलग नहीं किया जा सकता
-

सृजनात्मकता तथा बुद्धि स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं बावजूद इसके सृजनात्मकता को पूर्ण रूप से बुद्धि से अलग नहीं कर सकते, क्योंकि विचार प्रक्रिया न पूर्ण रूप से परंपरागत होती है न ही गैरपरंपरागत

होती है अपितु उसमें दोनो के कुछ तत्वों का समावेश होता है जो (Simultaneously) सृजनात्मकता तथा बौद्धिक प्रक्रिया में (Involve) होते हैं तो उसमें बुद्धि का न्यूनतम स्तर औसत से उपर ही होगा।

- **सृजनात्मकता तथा शैक्षिक उपलब्धि एक दूसरे से संबंधित नहीं होते**

सृजनात्मकता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं देखा गया। संभव है कि कोई सृजनात्मक हो परंतु शाला में उपलब्धि कम हो, या स्कूल में बोर्ड परीक्षा में अक्ल हो; परंतु सृजनात्मक बिल्कुल न हो, उपलब्धि परीक्षण किसी जानकारी (Information) को पुनः प्रस्तुत करने के गुण पर आधारित होती है।

जबकि सृजनात्मकता परीक्षण में की आवश्यकता होती है।

सामाजिकता तथा सृजनात्मकता में नकारात्मक सहसंबंध होगा सृजनात्मकता के लिए व्यक्ति का समस्या या सृजनात्मक कार्य के प्रति संवेदनशील होना ज्यादा आवश्यक है न कि उसके सामाजिक मूल्यांकन से वह अपना समय न कि सृजनात्मक कार्य में खर्च करना चाहता है, न कि अपने उन्हीं साथियों से मिलने वाली तारीफ की चिंता ज्यादा सामाजिक नहीं होते।

सृजनात्मकता तथा चिंता साथ-साथ चलती है - यह देखा गया सृजनात्मक लोग सामान्य से अधिक चिंता का स्तर दर्शाते हैं, परंतु यह चिंता या डर उन लोगों से अलग होता है जिनका व्यक्तित्व (Disturb) होता है। उन्हें यह डर रहता है कि उनका सृजनात्मक व्यक्ति अपने डर या चिंता को नियंत्रित करने की क्षमता रखता है।

1.6 सृजनात्मकता की पहचान-

अनेक मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मक प्रक्रिया का अध्ययन किया है।

स्टीन (1974) ने सृजनात्मक प्रक्रिया के निम्न स्तर बताये हैं।

(A) तैयारी (Preparation)

- (b) परिकल्पना बनाना। (Hypothesis Formation)
- (c) परिकल्पना परीक्षण (Hypothesis Testing)
- (d) निष्कर्षों (Communication of Result)

टॉरिस एवं मेयर ने (1970) ने निम्न अवस्थाओं को परिभाषित किया हैं,

- (a) समस्या के प्रति सजग होना-संवेदनशील होना। Becoming Together Sensitive To Or Aware Of Problem
- (b) सभी जानकारियों को एकत्रित करना। (Bringing Together All Information)
- (c) हल को खोजना या समस्या का हल ढूढ़ना (Searching For Solution)
- (d) निष्कर्षों को बताना।

वला (1926) ने सृजनात्मक प्रक्रिया को चार स्तरों में विभाजित किया है।

- (a) तैयारी-

इस स्तर पर किसी समस्या को चुना जाता है, विश्लेषण किया जाता है, तथा उसके समाधान के लिए प्रयत्न करते हैं। समाधान हेतु आवश्यक सामाग्री तथा तथ्यों का संकलन किया जाता है उसका मूल्यांकन किया जाता है और कार्य-योजना बनायी जाती है। तत्पश्चात् तय की गयी योजना पर काम शुरू करते हैं। कभी-कभी कार्य योजना परिवर्तित भी हो सकती है। हम दूसरी विधि का चुनाव कर सकते हैं। दूसरे उपयुक्त आंकड़ों का चयन कर सकते हैं।

इस तरह सतत प्रयत्न किये जाते हैं। कभी किसी स्तर पर हम समस्या का समाधान नहीं खोज पाते ऐसी स्थिति में निराशा हो सकती है।

दूसरे स्तर पर गतिविधि (Activity) नहीं होती कभी-कभी समस्या के संबंध में विचार भी नहीं किया जाता। हम किसी दूसरी पसंदीदा कार्यों में व्यस्त होते हैं या आराम करते हैं। अगर ऐसा होता है तो हमारे मन से समस्या-समाधान से संबंधित विचार धूधले होने लगते हैं।

1.7 सृजनात्मकता व्यक्ति में निम्नलिखित विशेषतायें पायी जाती है।

सृजनात्मकता बालक को हम उसकी व्यक्तित्व की विशेषताओं के आधार पर पहचान सकते जो उन्हें एक साधारण बालक से अलग करते हुए शोध ने व्यक्तित्व के कुछ लक्षण की सूची तैयार की जो एक सृजनात्मक बालक में पायी जाती है। कॅटल (1968), टॉरेंस (1962), मैकनिनोन (1962) तथा फॉस्टर (1971) द्वारा किये शोध के संदर्भों का आधार पर हम सृजनात्मक बालक की निम्न विशेषताओं को संबंधित किया हैं।

1. विचारों की मौलिकता
2. खतरा मोल लेने की इच्छा
3. अच्छी स्मृति तथा अच्छा ज्ञान
4. सर्तकता उत्साह एकाग्रता की मात्रा अधिक होती है।
5. खोज प्रवृत्ति तथा जिज्ञासा प्रकृति
6. स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता
7. महत्वकांक्षी स्वभाव
8. उदात्त विचारों वाला
9. समस्या के प्रति अतिसंवेदनशील
10. धाराप्रवाह में भावों को व्यक्त कर सकते हैं।
11. विचारों को विविधता
12. सीखने का स्थानांतरण करने की क्षमता
13. विस्तारण की क्षमता
14. डर न होना, अनजान वस्तु के प्रति आकर्षण
15. नवीनता को लेकर उत्साहित होते हैं।
16. अपनी रचना का अभिमान होता है।
17. उच्च सौंदर्यात्मक मूल्य होते हैं।
18. आत्मसम्मान जिम्मेदारियों के प्रति सजग होते हैं।
19. दूसरों के मतों का सम्मान करते हैं।
20. दृढ़निश्चयी

21. व्यावहारिकता में कमी
22. जोखिम उठाने को तैयार
23. अंतप्रज्ञात्मक

1.8 सृजनात्मकता को पोषित करने की विधि

सृजनात्मकता नैसर्गिक होती है, परंतु पोषित करना आवश्यक होता है। कई बार सृजनात्मक प्रतिभा योग्य प्रशिक्षण, शिक्षण अवसरों के अभाव में बेकार हो जाती है।

सृजनात्मकता सभी में थोड़ी-अधिक मात्रा में पायी जाती है। इसलिए शिक्षक और अभिभावकों को यह आवश्यक है कि सृजनात्मकता को पोषित करने वाला वातावरण निर्मित करे। सृजनात्मकता को प्रदर्शित करने वाले कारक जैसे मौलिकता विविधता प्रवाह अपसारो चिंतन, आत्मविश्वास, संवेदनशीलता संबंधों को समझने की योग्यता को विकसित करना। आवश्यक है, शिक्षक तथा अभिभावक को बालकों में सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ सुझाव निम्नवत है-

1. प्रतिक्रिया की स्वतंत्रता (freedom to respnd) शिक्षक अभिभावक बालक से अधिकतर निश्चित प्रतिक्रिया या उत्तर की अपेक्षा करते हैं। इस तरह से वह बच्चों की भीतर की सृजनात्मकता को दबा देते हैं। बालक को अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता देनी चाहिए ज्यादा से ज्यादा विचार प्रस्तुत करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए किसी समस्या को सुलझाने हेतु उन्हें तरीका ढूढ़ने देना चाहिए जो मौलिक हों।
2. संकोच तथा डर को दूर करना (Removal of hesitation) कभी-कभी सृजनात्मक होते हुए भी बालक संकोच तथा भय के कारण उसे व्यक्त नहीं कर पाता आगे बढ़कर कोई कार्य नहीं कर पाता, दूसरों के सामने खुलकर बात नहीं कर पाता, शिक्षक को उन कारणों का पता लगाना चाहिए तथा उन्हें दूर करना चाहिए।

3. अहंकार के संतुष्टी का अवसर (opportunity to satisfy ego) यह मेरा सृजन है इसे मैंने हल किया है ऐसे विचार बच्चों को खुशी तथा संतुष्टी प्रदान करती है। बालक सृजनात्मक कार्य करने का प्रयास तब करता है जब उसका अंह उससे घनिष्ठ रूप से संबंधित हो
4. मौलिकता तथा विविधता को बढ़ावा देना (Encouraging originality flexibility) छात्रा के मौलिक तथा वैविध्यपूर्ण कार्य को बढ़ावा देना चाहिए अगर छात्र अपनी सीखने की शैली को बदलना चाहते है तो हमें छात्र को अवसर प्रदान करने चाहिए।
5. बालकों में स्वस्थ आदतों का विकास (Developing healthy habit) सृजनात्मकता के लिए आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता जैसे गुण आवश्यक होते है इन गुणों को बढ़ावा देने के लिए अभिभावक तथा शिक्षकों ने अपना योगदान देना चाहिए। हमें बालक को यह एहसास दिलाना आवश्यक है कि जो भी कार्य वह कर रहा है वह अद्वितीय है। जो भी वह अभिव्यक्त करना चाहता है वह करे।
6. समुदाय में उपस्थित सृजनात्मक स्रोतों का उपयोग (Using creative sources in community) बालकों को कला संस्थान, संग्रहालय, विज्ञान प्रदर्शनी ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण हेतु ले जाना चाहिए। यह उन्हें सृजनात्मक कार्य के लिए प्रेरित करते है।

कलाकार, वैज्ञानिक, सृजनशील व्यक्तियों से बालकों को मिलने का अवसर प्रदान करना चाहिए अथवा ऐसे व्यक्तियों के स्कूल में आमंत्रित करना चाहिए जिससे छात्र उनकी कार्यशैली से परिचित हो

7. सृजनात्मक चिंतन में बाधा डालने वाले तत्वों को रोकना (Avoid elements which block creative thinking)

रूढ़ीवादी विचार शिक्षण की गलत विधियाँ, रूखा व्यवहार रूढ़िवादी कार्यशैली, डर, कुंठा शैक्षिक उपलब्धि पर ज्यादा जोर देना, शिक्षक-अभिभावकों को दबंग प्रवृत्ति बालक को सृजनात्मकता पर नकारात्मक प्रभाव डालते है।

इसलिए अभिभावक तथा शिक्षकों को इन्हें टालना चाहिए। मुख्य रूप से बढ़ते बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए।

8. उदाहरणों द्वारा सीख देना (Teaching by example)

हम जानते हैं कि बालक शिक्षकों का अपने से बड़ों का अनुकरण करते हैं बालकों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देना है तो शिक्षकों को भी अपने आप में सृजनात्मकता का विकास करना चाहिए। जो अभिभावक शिक्षक परंपरागत विधियों का अनुकरण करते हैं उन्हें गलत होने के डर से नयी या मौलिक विधि नहीं अपनाते कभी जिन्होंने नये सृजन के उत्साह को अनुभव नहीं किया ऐसे व्यक्ति बच्चों में सृजनात्मकता को उद्दीपीत नहीं कर सकते। शिक्षक-अभिभावक दोनों को ही अपने में सृजनात्मक चिंतन का विकास करना चाहिए।

9. सृजनात्मकता को बढ़ावा देने हेतु विशिष्ट तकनीक का उपयोग (Use special technique for fostering creativity) छात्रों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए विशेष तकनीक विधियों सुझाव दिये हैं।

(a) खेल तकनीक का उपयोग (Use of game)

खेल भावना में खेल-खेल में सीखना छात्रों में सृजनात्मकता के लक्षणों को विकसित करते हैं। ये तकनीके उपयोगी सीखने का अनुभव प्रदान करती है। शाब्दिक तथा अशाब्दिक दोनों ही साधनों का उपयोग किया जाता है। जैसे शाब्दिक तकनीक के अंतर्गत बालक को चाकू के विभिन्न उपयोगों के संबंध में पूछा जाये, अथवा उन्हें गोल वस्तुओं की सूची बनाने को कहा जाये।

मस्तिष्क उद्वेलन (Brainstorming) ब्रेनस्ट्रोमिंग एक ऐसी तकनीक है जो किसी समूह को अपनी विचारों को प्रदर्शित करते हैं, बिना किसी पूर्वाग्रह छात्रों को एक समूह में बैठने के लिए कहा जाता है उन्हें एक समस्या को विविध पद्धति से हल करने को कहा जाता है। इस तरह से उनके मस्तिष्क को सोचने के लिए प्रेरित किया जाता है। जैसे उनसे कहा

जाये कि भारत में बढ़ते आतंकवाद को आप कैसे रोकेंगे, फिर उन्हें जितनी जल्दी हो सके अपनी विचार प्रस्तुत करने होते हैं। ऐसा करने पर छात्रों में मानको का निरीक्षण किया जाता है। अशाब्दिक तकनीकी के अन्तर्गत बालक को गुटको से विभिन्न डिजाईन बनाना, चित्र पूर्ति करना, चित्र पैटर्न से निष्कर्ष निकलाने को कहा जाये।

- (1) मस्तिष्क उद्वेलन (Brainstorming) के अंतर्गत किसी भी विचार की आलोचना नहीं की जाती सभी विचारों की सराहना की जाती है।
- (2) छात्रों की जादा से जादा समाधान खोजने हेतु प्रेरित किया जाता है जो दूसरों से अलग हो।
- (3) यह आवश्यक नहीं कि छात्र नया समाधान प्रस्तुत करे वह अपने साथियों द्वारा प्रस्तुत समाधान में कुछ जोड़ सकते हैं।
- (4) जब तक सत्र समाप्त नहीं होता तब तक किसी भी प्रकार की टिप्पणी अथवा मूल्यांकन नहीं किया जाता है। तथा जो समाधान सबसे उपयुक्त हो उसे स्वीकृत किया जाता है।
- (5) शिक्षण प्रतिमान का उपयोग (Use OF Teaching Model) शिक्षा शास्त्रीयों के द्वारा विकसित किये गये शिक्षण प्रतिमान का उपयोग भी सृजनात्मकता के विकास में सहायक होता है-जैसे ब्रूनर का कॉन्सेप्ट अट्टेनमेन्ट मॉडल (Concept of Attainment Model) की सहायता से बालकों में प्रत्ययों को सीखने में सहायक होते हैं। वैसे ही सचमेन का पृच्छ प्रतिमान।

1.9 सारांश

- सृजनात्मकता वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कुछ नया निर्मित होता है। विचार, वस्तु, जिसमें पुराने तत्वों को नवीन तरीके में व्यवस्थित किया जाता है। नवीन सृजन किसी समस्या का समाधान प्रस्तुत करता हो।
- सृजनात्मकता को निम्न चार तत्वों में परिलक्षित किया गया है-
प्रवाह

विविधता

मौलिकता

विस्तारण

- सृजनात्मकता की विशेषताएँ—
 - सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती हैं
 - सृजनात्मकता खुले विचारों की होती है
 - सृजनात्मकता का क्षेत्र वृहद होता है,
 - सृजनात्मकता तथा बुद्धि दोनों का साथ होना आवश्यक नहीं है,
 - सृजनात्मकता परंपरागत चिंतन की अपेक्षा गैर परंपरागत चिंतन पर आधारित होती है,
 - सृजनात्मकता तथा शैक्षिक उपलब्धि एक दूसरे से संबंधित नहीं होते,
 - सामाजिकता तथा सृजनात्मकता में नकारात्मक सहसंबंध होता है।
- अनेक मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मक प्रक्रिया का अध्ययन किया है मुख्य रूप से चार स्तर
तैयारी
परिकल्पना बनाने में
परिकल्पना परीक्षण में
निष्कर्ष
- सृजनात्मक व्यक्ति में निम्न विशेषताएँ पायी जाती हैं जैसे—
 - धाराप्रवाह
 - मौलिकता
 - सीखने के स्थानांतरण की क्षमता
 - विस्तारण की क्षमता
 - नवीनता को लेकर उत्साहित होना
 - आत्मानुशासन, आत्मसम्मान,
 - नवीनता को लेकर उत्साहित होना
 - दृढनिश्चयी
 - व्यावहारिकता में कमी

- जोखिम उठाने को तैयार
- अंतप्रज्ञात्मक
- निम्न प्रयासों से सृजनात्मकता को प्रोत्साहित किया जा सकता है
 - प्रतिक्रिया की स्वतंत्रता
 - संकोच तथा डर को दूर करना।
 - मौलिकता तथा विविधता को बढ़ावा देना।
 - बालकों में स्वस्थ आदतों का विकास
 - समुदाय में उपस्थित सृजनात्मकता के स्रोतों का उपयोग
 - सृजनात्मकता में बाधा डालने वाले तत्वों को रोकना।
 - उदाहरणों द्वारा सीखना
 - सृजनात्मकता को बढ़ावा देने हेतु विशिष्ट तकनीक का उपयोग
 - विशिष्ट तकनीक का उपयोग
 - (a) खेल-खेल में सीखना
 - (b) ब्रेनस्ट्रॉर्मिंग
 - (c) शिक्षण प्रतिमान का उपयोग

1.10 अपनी प्रगति जानिये-

- सृजनात्मकता को परिभाषित करते हुए उसका अर्थ समझाइये।
- सृजनात्मकता के तत्वों का वर्णन कीजिए।
- सृजनात्मकता की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
- सृजनात्मक व्यक्ति की विशेषताएँ क्या होती हैं।
- सृजनात्मकता को बढ़ावा देने हेतु आप कौन सी विधियों का उपयोग करेंगे।
- सृजनात्मकता की प्रक्रिया किन स्तरों के अंतर्गत होती है।